प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 17 (2019–20)

हिन्दी – ब (कोड–85)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 10

शिवाजी का नाम प्रत्येक भारतीय जानता है। इनको महान बनाने का श्रेय समर्थ गुरू रामदास को है। समर्थ गुरू रामदास का जन्म 1608 ई. में एक छोटे–से ग्राम में हुआ था। इनकी माता का नाम राणुबाई था और इनके पिता का नाम सूर्याजी पंत था। इनका बचपन का नाम नारायण था। प्रारम्भ से ही ये विवाह नहीं करना चाहते थे। विवाह–मंडप से ही ये भाग गए थे।

घर छोड़कर नासिक में एक गुफा में रहकर तप करने लगे। कहा जाता है कि एक पटवारी की स्त्री को आशीर्वाद देकर उसके पति को जिन्दा कर देने की घटना से उनका यश चारों ओर फैल गया।

बाद में शिवाजी ने इन्हें अपना गुरू बनाया। शिवाजी समस्त कार्य उनकी आज्ञा से ही करते थे। शिवाजी ने एक बार भीख माँगने पर सारा राज्य इनको दे दिया। बाद में गुरू के कहने पर मंत्री के रूप में राज्य का कार्य करने लगे। इनमें अनेक आश्चर्य में डालने वाली शक्तियाँ थीं। इन्होंने शिवाजी की वीरता की परीक्षा शेरनी का दूध मँगाकर की थी। शिवाजी के साथ गुरू रामदास का नाम हमेशा लिया जाता है।

1. गुरू रामदास कौन थे? उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए। 2
उत्तर : गुरू रामदास महान शिवाजी के गुरू थे। शिवाजी को महान बनाने का श्रेय गुरू रामदास को ही जाता है। एक छोटे–से गाँव में इनका जन्म हुआ था। बचपन का नाम नारायण था। विवाह न करने की हठ में ये मंडप से ही भाग गए थे और एक गुफा में रहकर तप करने लगे थे।
2. अपने गुरू के प्रति शिवाजी की भक्ति कैसे पता चलती है? 2
उत्तर : शिवाजी अपने गुरू रामदास की आज्ञा से ही समस्त कार्य करते थे। एक बार भीख माँगने पर शिवाजी ने अपना सारा राज्य उन्हें दे दिया। बाद में उन्हीं के कहने पर मंत्री के रूप में राज्य का कार्य करने लगे।
3. शिवाजी के साथ किसका नाम जुड़ा हुआ है और क्यों? 2
उत्तर : शिवाजी के साथ उनके गुरू रामदास जी का नाम हमेशा लिया जाता है, क्योंकि शिवाजी उनके परम भक्त व दास थे, उनकी आज्ञा के बिना कोई काम नहीं करते थे। शिवाजी ने गुरू की परीक्षा में खरे उतरने के लिए शेरनी का दूध भी लाकर दे दिया था।
4. प्रस्तुत गद्यांश क्या संदेश दे रहा है? स्पष्ट कीजिए। 2
उत्तर : गद्यांश में शिवाजी की अपने गुरू के प्रति अटूट श्रद्धा व निष्ठा दिखाई गई है, जिससे यह संदेश मिलता है कि जब हम स्वयं को पूर्ण रूप से समर्पित कर देते हैं, परमात्मा अथवा गुरू पर पूर्ण विश्वास रखते हुए कर्म करते हैं, तब हमें स्वतः सच्चे ज्ञान की, सत्य की प्राप्ति हो जाती है।
5. गद्यांश में से दो सामासिक शब्द छाँटकर लिखिए। 1
उत्तर : विवाह–मंडप, रामदास।
6. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1
उत्तर : वीर शिवाजी।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. मैं एक प्रतिष्ठित विद्यालय की छात्रा हूँ। रेखांकित शब्द है या पद? 1
उत्तर : पद

3. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए। $1 \times 3 = 3$

1. ततांरा को वामीरो के आने की पूरी आशा थी। (मिश्र वाक्य में)
उत्तर : ततांरा को पूरी आशा थी कि वामीरो आएगी।
2. जब सच सामने आ ही गया है तब दलील क्यों दे रहे हो? (सरल वाक्य में)
उत्तर : सच सामने आ जाने पर भी दलील क्यों दे रहे हो?
3. तुम्हें तुम्हारी मेहनत का फल अवश्य मिलेगा। (संयुक्त वाक्य में)
उत्तर : तुमने मेहनत की है और तुम्हें फल अवश्य मिलेगा।

4.

1. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए– $1 \times 2 = 2$

चिकित्सालय, दशानन

उत्तर : चिकित्सालय– चिकित्सा के लिए आलय (तत्पुरूष समास)
दशानन– दस हैं आनन जिसके (बहुव्रीहि समास)

2. निम्नलिखित विग्रहों के समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए। $1 \times 2 = 2$

शुभ है जो आगमन, तीन वेणियों का समाहार

उत्तर : शुभ है जो आगमन– शुभागमन (कर्मधारय समास)
तीन वेणियों का समाहार– त्रिवेणी (द्विगु समास)

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. कृपया आप हमारे घर आने की कृपा करें।
उत्तर : आप कृपया हमारे घर आयें।
2. खरगोश को काटकर गाजर खिलाओ।
उत्तर : गाजर काटकर खरगोश को खिलाओ।
3. यहाँ घास में चलना मना है।
उत्तर : यहाँ घास पर चलना मना है।
4. जो जैसा करता है सो भरता है।
उत्तर : जो जैसा करता है, वैसा ही भरता है।

6. उचित मुहावरों द्वारा रिक्त स्थान को पूरा कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. इस रूकावट को पार करना तो मेरे ..... है।
उत्तर : बायें हाथ का खेल (बायें हाथ का खेल होना)
2. अपने बचपन के मित्र से झूठ बोलकर, उसकी ..... तुम पाप कर रहे हो।
उत्तर : आँखों में धूल झोंककर (आँखों में धूल झोंकना)
3. जैसे ही मैंने होटल में अपने अध्यापक को देखा मेरे ..... गए।
उत्तर : प्राण सूख (प्राण सूखना)
4. जब हम कोई गलती करते हैं तभी हमें ..... पड़ता है।
उत्तर : दबे पाँव आना (दबे पाँव आना)

खण्ड–ग 28

(पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक)

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 30–40 शब्दों में लिखिए। $2 \times 3 = 6$

1. ततांरा–वामीरो की प्रथम मुलाकात का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
उत्तर : निकोबार द्वीप के पासा गाँव का रहने वाला युवक ततांरा एक दिन अथक् परिश्रम के बाद समुद्र तट पर टहल रहा था। अचानक उसके कानों में एक मधुर गीत गूँजा। आवाज की दिशा में चलकर उसने देखा कि एक सुन्दर युवती वह गीत गा रही थी, किन्तु लहर के भिगो जाने पर वह अचानक शान्त हो गई। ततांरा उसके प्रति बेहद आकर्षक हो गया और उसे गीत जारी रखने की व नाम बताने की याचना करता रहा, किन्तु वह युवती वामीरो गाँव की रीतियों के कारण उसके प्रश्नों का उत्तर न दे सकी।
2. शेख अयाज के पिता किस कारण से भोजन छोड़कर उठ गए? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर : शेख अयाज के पिता एक दिन कुएँ से नहाकर आए और जैसे ही भोजन करने बैठे, उनकी नजर अपनी बाजू पर रेंगते च्योंटे पर गई। वे तुरन्त खाना छोड़कर खड़े हो गए और उस च्योंटे को कुएँ पर उसके परिवार के पास छोड़कर आए। उन्हें लगा कि जिस प्रकार हम अपनों से बिछुड़कर दुःखी हो जाते हैं, यह छोटा–सा जीव भी परेशान हो रहा होगा। अतः उसे अपनों के पास पहुँचाकर उन्होंने अपनी संवेदनशीलता व भावुकता का परिचय दिया।
3. लेखक रवीन्द्र केलेकर ने 'प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट' किसे कहा है?
उत्तर : लेखक रवीन्द्र केलेकर ने आदर्शवादी तथा व्यावहारिक लोगों के अतिरिक्त एक तीसरे व्यक्तित्व की भी चर्चा की है। जो लोग अपने आदर्शों को व्यवहार में लाना जानते हैं उन्हें लेखक ने 'प्रैक्टिकल आइडियलिस्ट' कहा है। लेखक का मानना है कि ऐसे ही लोगों की वजह से आदर्शों का अस्तित्व व महत्त्व बना हुआ है अन्यथा शुद्ध आदर्शवादी लोग केवल आदर्शों की बातें ही करते रह जाएँगे और उनकी ताकत सिद्ध नहीं हो पाएगी।
4. लेखक से बड़े भाई साहब का हमेशा क्या सवाल होता था? लेखक की प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिए।
उत्तर : लेखक अपने बड़े भाई के साथ छात्रावास में रहते थे। लेखक को समझाना, उनका मार्गदर्शन करना, उन्हें सही राह पर बनाए रहना बड़े भाई की ही जिम्मेदारी थी। इसलिए वे स्वयं घंटों किताबें लिए बैठे रहते थे, जबकि लेखक की रूचि खेलकूद में अधिक थी। जब लेखक घंटों खेल में बर्बाद करके लौटते तो भाई साहब का हमेशा एक ही सवाल होता, 'कहाँ थे' लेखक जवाब में केवल मौन रह जाते थे। जिसका अर्थ होता था कि उन्हें अपना अपराध स्वीकार है।

8. 'कारतूस' शीर्षक इस एकांकी के लिए किस प्रकार उचित है? तर्क सहित 80–100 शब्दों में उत्तर दीजिए। 5

उत्तर : एकांकी 'कारतूस' एक ऐसे भारतीय जांबाज की बहादुरी, साहस व आत्मविश्वास का परिचय दे रहा है जिसके मन में अंग्रेजों के लिए नफरत कूट–कूटकर भरी थी, वह किसी भी कीमत पर भारत को आजाद कराना चाहता था। इसके लिए उसने समय–समय पर अंग्रेजों को अपनी शक्ति का परिचय दिया। अंग्रेजी वकील का कत्ल करके तो वह लगातार अंग्रेजों की आँखों में धूल झोंकता रहा। यह जानते हुए भी कि कर्नल लाव–लश्कर सहित उसी की तलाश कर रहा है, वह अकेला उनके खेमें में ही नहीं पहुँच गया, बल्कि उन्हीं के हाथों से कारतूस भी ले लिए और जाते–जाते अपना परिचय भी दे दिया तथा कहा कि वजीर अली की गिरफ्तारी बहुत ही मुश्किल है। इस प्रकार 'कारतूस' लेने के बहाने जिस दिलेरी व आत्मविश्वास के साथ वह खेमे में दाखिल हुआ और

चेतावनी देकर चलता बना, उस आधार पर कहा जा सकता है कि 'कारतूस' शीर्षक इस एकांकी के लिए उचित है, किन्तु इसके अलावा 'जांबाज सिपाही' या 'वीर वजीर' जैसे शीर्षक भी दिए जा सकते थे।

अथवा

'लेखक के भाई साहब बड़े होने का फर्ज बखूबी निभाते थे।' पाठ 'बड़े भाई साहब' के आधार पर 80–100 शब्दों में सिद्ध कीजिए।

उत्तर : लेखक अपने बड़े भाई साहब के साथ छात्रावास में रहते थे। उन्हें खेल–कूद में बेहद आनन्द आता था, जबकि बड़े भाई साहब दिन भर किताबें लिए बैठे रहते थे। ऐसा नही कि उनका खेलने–कूदने, पतंगें उड़ाने का मन नहीं करता था, किन्तु वे अपनी जिम्मेदारी के बोझ तले दबे थे। उन्हें अहसास था कि बड़े होने के नाते छोटे भाई को समझाना, उसका मार्गदर्शन करना उनका कर्त्तव्य ही नहीं, जन्मसिद्ध अधिकार भी है। वे इस कर्त्तव्य व अधिकार का पालन करना बखूबी जानते थे। लेखक के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करने के लिए हमेशा किताबें लेकर बैठे रहते थे, क्योंकि जानते थे कि वे बेराह चलेंगे तो छोटे भाई को कैसे समझायेंगे। उनके इन प्रयासों के बावजूद भी लेखक खेल–कूद से दूर नहीं रह पाते थे तो भाई साहब उन्हें डाँटने, समझाने, उपदेश देने का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे। कभी अपने अनुभव से तो कभी इतिहास से ऐसे–ऐसे उदाहरण देते कि लेखक पानी–पानी हो जाते। सम्भवतः उनके इन उपदेशों का ही परिणाम रहा कि लेखक हर बार अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण होते गए। इस प्रकार भले ही स्वयं असफल हो रहे हों, किन्तु बड़े भाई का फर्ज वे बखूबी निभा रहे थे।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 30–40 शब्दों में लिखिए। $2 \times 3 = 6$

1. 'मनुष्यता' कविता में गर्व रहित जीवन जीने की सीख क्यों दी गई है?

   उत्तर : कवि 'मैथिलीशरण गुप्त' का मानना है कि मनुष्य होने के नाते हमारे अन्दर कुछ मानवीय गुणों का होना परम आवश्यक है, उन्हीं में से एक गुण है 'निराभिमान'। हमें हर स्थिति में अंहकार से दूर रहना चाहिए। भले ही हम सनाथ हों, हमारे पास धन–दौलत की कमी न हो, किन्तु कभी भूलकर भी धन जैसी तुच्छ, अस्थाई वस्तु पर घमण्ड नहीं करना चाहिए और किसी को अनाथ जानकर कमजोर नहीं समझना चाहिए, क्योंकि ईश्वर के होते हुए कोई बेसहारा है ही नहीं।

2. कबीरदास जी ने सच्चा ज्ञानी या पंडित किसे माना है?

   उत्तर : संत कबीर का मानना है कि शास्त्र व पुस्तकें पढ़–पढ़कर तो युग बीत गए, कितने ही लोग संसार से चले गए, किन्तु वे ज्ञानी नहीं बन पाए, क्योंकि सच्चा ज्ञान मात्र शास्त्र पढ़ने से नहीं आता, अपितु हृदय में प्रेम की भावना जगाने से आता है। शास्त्र ज्ञान तो अहंकार को जन्म दे सकता है और अहंकार हमें सबसे प्रेम करने से रोकता है, अन्य अनेक विकारों को जन्म देता है। अतः सच्चा ज्ञानी वह है जिसके हृदय में प्रत्येक जड़–चेतन के प्रति समान रूप से प्रेम का भाव विद्यमान है।

3. 'तोप' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।

   उत्तर : 'तोप' कविता का संदेश है कि प्रत्येक वस्तु या व्यक्ति एक–न–एक दिन शक्तिहीन हो जाता है। अतः समय रहते हमें अपनी शक्ति का सदुपयोग करना चाहिए। इसमें 1857 की उस तोप का वर्णन है जो कभी बहुत शक्तिसंपन्न थी। उसने हमारे अनेक वीरों को मौत के घाट उतारा था। आज वही तोप निस्तेज हो चुकी है, बच्चों का खिलौना व पक्षियों का आवास बन चुकी है।

4. कृष्ण की दासी बनकर मीरा की कौन–सी तीन इच्छाएँ पूर्ण हो जाएँगी?

   उत्तर : मीरा कृष्ण की दासी बन जाएँगी तो उनके दर्शन, स्मरण और भाव–भक्ति, तीनों इच्छाएँ पूरी हो जाएँगी। इसलिए मीरा कृष्ण से प्रार्थना कर रही हैं कि वे उन्हें अपनी दासी के रूप में स्वीकार करके हर पल अपनी सेवा तथा दर्शन का अवसर प्रदान करें।

10. 'कर चले हम फिदा' कविता के आधार पर सैनिक की भावनाओं का वर्णन 80–100 शब्दों में कीजिए। 5

उत्तर : प्रत्येक जीव को अपना जीवन अत्यधिक प्रिय होता है। कोई भी अपने जीवन को खोना नहीं चाहता, भले ही जिन्दगी से नाखुश हों, किन्तु संकट आने पर प्राणों की रक्षा चाहते हैं। एक असाध्य रोगी भी जीवन की कामना करता है, किन्तु दूसरी ओर सीमा पर तैनात हमारे वीर सिपाही हमारी व देश की रक्षा की खातिर अपना जीवन दाँव पर लगा देते हैं, हर पल उनके सिर पर नंगी तलवार लटकती रहती है, फिर भी अपने फर्ज से पीछे नहीं हटते। अन्तिम साँस तक उनके कदम आगे ही बढ़ते जाते हैं। सिर भले ही कट जाए किन्तु देश का सिर झुकने नहीं देते, देश के आत्म–सम्मान और गौरव की खातिर अपना सर्वस्व कुर्बान कर देते हैं। अपने जीवन की तो उन्हें परवाह नहीं होती, किन्तु यही चिन्ता सताती है कि उनके बाद देश की हिफाजत कौन करेगा? उनकी इसी मार्मिक सोच को कवि 'कैफी आजमी' ने बखूबी बयान किया है।

अथवा

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के माध्यम से प्रकृति के अलौकिक दृश्यों का सजीव वर्णन किया गया है। 80–100 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कवि 'सुमित्रानन्दन पंत' जी ने 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के माध्यम से पर्वतीय क्षेत्र के पल–पल बदलते दृश्यों का अद्भुत वर्णन किया है। कवि ने कल्पना की है कि वहाँ दूर तक, गोल आकार के विशाल पर्वत दिखाई दे रहे हैं, जिनकी परछाईं नीचे तालाब में पड़ रही है, मानो वे पर्वत हजारों पुष्प रूपी आँखों से तालाब रूपी दर्पण में अपनी छवि को निहार रहे हों। पर्वतों पर लगे ऊँचे वृक्ष आकाश को छूते–से प्रतीत हो रहे हैं, मानो वे पर्वतों के हृदय से निकल रही ऊँची–ऊँची

आकांक्षाएँ हों। इस मनोरम दृश्य में चार चाँद लगाते हुए झरने बह रहे हैं जो दूर से देखने में मोती की लड़ियों–सा सौन्दर्य उत्पन्न कर रहे हैं तथा उनकी ध्वनि सुनकर लगता है, मानो वे पर्वतों की प्रशंसा के गीत गा रहे हों। अचानक यह सम्पूर्ण दृश्य बादलों व मूसलाधार वर्षा द्वारा ढक लिया जाता है, केवल झरनों का शोर, बादल व तालाब से उठता धुआँ दिखाई दे रहा है। इस अलौकिक दृश्य को कवि ने इन्द्र देवता द्वारा रचा हुआ जादू का खेल कहकर इस वर्णन को अत्यधिक रोमांचक बना दिया है।

11.

1. 'अम्मी' शब्द पर टोपी के घर वालों की क्या प्रतिक्रिया हुई और क्यों? आपके विचार से यह कहाँ तक उचित है? (60–70 शब्दों में समझाइये) 3

उत्तर : टोपी शुक्ला ऐसे दो दोस्तों की कहानी है जिनका पालन–पोषण पूर्णतः भिन्न वातावरण में हुआ। दोनों को अलग–अलग संस्कार व परम्पराएँ देखने को मिलीं। जाति, सम्प्रदाय, घर का माहौल, भाषा, खान–पान सब भिन्न होने पर भी दोनों घनिष्ठ मित्र बन गए। टोपी का इफ्फन के घर बहुत आना–जाना था, जिसके कारण उसने उर्दू के कुछ शब्द अनायास ही सीख लिए थे। एक दिन अपने घर में उसने अम्मी शब्द का प्रयोग कर डाला। खाने की मेज पर बैठे लोगों के हाथ वहीं रूक गए, हिन्दू परम्परा की दीवारें डोल गयीं। टोपी की दादी तो उस पर व उसकी माँ पर इतनी बरसी कि टोपी की माँ ने उसकी जमकर पिटाई की व आगे से उस 'मुसलमान' से दोस्ती न रखने को कहा, किन्तु टोपी ने इससे साफ इन्कार कर दिया।

2. ओमा कौन था? लेखक और उनके मित्र उनसे क्या प्रेरणा लेते थे? (60–70 शब्दों में समझाइये) 3

उत्तर : 'पाठ सपनों के से दिन' में लेखक व उनके मित्र बड़ी ही अरूचि के साथ विद्यालय जाते थे। ग्रीष्मावकाश में मिलने वाला कार्य तो उन्हें बहुत ही बोझ लगता था। उसे करने की योजनाएँ बनाते–बनाते अवकाश समाप्त होने लगते। ऐसे में वे छात्रों के नेता 'ओमा' से प्रेरित होते जो कभी स्कूल का काम नहीं करता था। मास्टरों की डांट खाना उसे अधिक सस्ता सौदा लगता था। वह ठिगने कद का था, सिर बहुत बड़ा, बिल्ली जैसी आँखें और बाघ की तरह झपटकर झगड़ा तो ऐसे करता था कि उससे दुगुने कद वाले लड़के भी घबरा जाते थे। काम न करने का निर्णय लेते समय लेखक उसी को आदर्श बनाते थे।

खण्ड–घ (लेखन) 26

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 80–100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए। 6

1. **स्त्री शिक्षा**

   ✻ आवश्यकता ✻ बढ़ते आँकड़े ✻ संतान तथा समाज पर प्रभाव।

2. **श्रम का महत्त्व**

   ✻ तात्पर्य ✻ सफलता का सोपान ✻ भविष्य का निर्माण।

3. **मन के हारे हार है मन के जीते जीत**

   ✻ निराशा अभिशाप ✻ दृष्टिकोण परिवर्तन ✻ सकारात्मक सोच।

उत्तर :

1. स्त्री शिक्षा

शिक्षा व्यक्ति के विवेक को जगाकर उसे सही दिशा प्रदान करती है। मानव जाति की प्रगति का इतिहास शिक्षा के इतिहास के साथ ही लिखा गया है। शिक्षा नारी और पुरूष दोनों के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण है अन्यथा सही अर्थों में न प्रगति होगी न शांति। भारत जैसे विकासशील देश में स्त्री शिक्षा का महत्त्व इसलिए अधिक है कि वह देश की भावी पीड़ी को योग्य बनाकर उनका उचित मार्गदर्शन कर सकती है। नेपोलियन ने कहा भी है– "मातृभूमि की प्रगति शिक्षित और समझदार माताओं के बिना असंभव है।" यह ठीक ही कहा गया है कि एक पुरूष को शिक्षा देने से वह अकेला शिक्षित होता है लेकिन स्त्री की शिक्षा से समूचा परिवार शिक्षित हो सकता है। प्राचीनकाल में स्त्रियों के लिए गुरूकुल की व्यवस्था नहीं होती थी फिर भी गार्गी, मैत्रेयी, विद्योत्तमा, लोपामुद्रा जैसी विदूषी स्त्रियों के हमें दर्शन होते हैं। आधुनिक युग में स्त्रियों को भी शिक्षा के समान अधिकार प्राप्त हुए। स्त्री शिक्षा का महत्त्व लोगों को दिनों–दिन पता चलता रहा है और इसके आँकड़े बढ़ते जा रहे हैं। स्त्री की पहली भूमिका एक पुत्री के रूप में, दूसरी भूमिका पत्नी के रूप में तथा तीसरी और अंतिम भूमिका माँ के रूप में होती है। शिक्षित होकर वह इन तीनों भूमिका के कर्त्तव्यों का सही रूप से पालन कर पाती है। शिक्षित माँ बच्चों का सही मार्गदर्शन कर उनके विचारों को परिपक्व करके उनके चरित्र निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। समाज और राष्ट्र की प्रगति में वह पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में समर्थ है। आज हर क्षेत्र में शिक्षित नारी ने अपनी सफलता के झंडे गाड़ दिए हैं। विश्व के प्रगति में स्त्रियों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। एक शिक्षित स्त्री परिवार, समाज और पूरे राष्ट्र का गौरव होती है।

2. श्रम का महत्त्व

"श्रम" का अर्थ है– तन मन से किसी कार्य को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील होना। श्रम के भेद हैं– मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम। जीवन में दोनों का अपना–अपना महत्त्व हैं। श्रम की महत्ता बताते हुए गांधीजी ने कहा था– "जो अपने हिस्से का परिश्रम किए बिना ही भोजन करते हैं वे चोर हैं।" परिश्रमी व्यक्ति के पास मेहनत की सुनहरी कुंजी होती है जो भाग्य के बन्द कपाट खोल देती है। संसार रूपी कर्म क्षेत्र में निरंतर श्रम करके ही हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। परिश्रम के बल पर ही मनुष्य ने समुद्र लांघ लिया, आकाश नाप लिया और दुर्गम पहाड़ों पर भी चढ़ गया। श्रम ही मनुष्य का सच्चा

मित्र है इसीलिए कहा जाता है– "श्रमेव जयते।" मनुष्य अपने भविष्य का निर्माण श्रम से ही करता है। उसे आत्मविश्वास के साथ लक्ष्य रखकर आगे बढ़ना होगा ताकि सफलता उसके कदम चूमें। राष्ट्र की उन्नति श्रम के द्वारा ही संभव होती है। अमेरिका, जापान और चीन इस बात को सत्यापित करते हैं। भारतीय मनीषियों ने भी कहा हैं–

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें सिल पर परत निसान।।"

3. मन के हारे हार हैं मन के जीते जीत

जीवन की विषम परिस्थितियाँ कभी–कभी हम पर इतनी हावी हो जाती है कि हम मन ही मन घुटने लगते हैं। नतीजतन हम अपनी क्षमता को खो बैठते हैं और हमारी नैसर्गिक प्रतिभा भी हमसे रूठ जाती है। अवसाद–ग्रस्त होकर खुद ही हीनता से जकड़ जाते हैं। असफलता और निराशा मनुष्य को लक्ष्य से भटकाती है। वह साधनसंपन्न होते हुए भी सबसे नजरें चुराता है। हमें अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाकर आत्मविश्वास के बल पर विवेक से काम लेना होगा। कहा भी गया है 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत' अर्थात् जो मन से हार जाता है वह अपनी इंद्रियों का गुलाम बन जाता है और सफलता से दूर हो जाता है। जिसने अपने मन को जीत लिया है दुनिया में वही व्यक्ति विजयी होता है। यदि वह अपनी ऊर्जा को एकत्रित कर सकारात्मक कार्यों में लगाएँ और अपने दृष्टिकोण को परिवर्तित करे तो सफलता प्राप्त हो सकती है। हमें दूसरों की कमजोरियों को नहीं बल्कि अपनी कमजोरी को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। फालतू की बातों को न सोचकर परिष्कृत सोच को अपनाना चाहिए और लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए। अंततः विजयश्री उसके कदम चूमेगी।

13. विद्यालय से आर्थिक सहायता की माँग करते हुए प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना पत्र 80–100 शब्दों में लिखिए। **5**

उत्तर :

सेवा में,
प्रधानाचार्य महोदय,
गायत्री देवी विद्यालय
दिल्ली।

विषय– आर्थिक सहायता हेतु प्रार्थना।

आदरणीय महोदय,

मैं आपके विद्यालय की कक्षा दसवीं का छात्र हूँ। नर्सरी कक्षा से नियमित रूप से इसी विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर रहा हूँ व प्रतिवर्ष अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होता हूँ। समय–समय पर खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेकर मैंने विद्यालय का नाम भी रोशन किया है।

महोदय, गत वर्ष से हमारे परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं चल रही है। पिताजी मेरी पढ़ाई का व विद्यालय के अन्य शुल्क चुकाने में असमर्थ हैं। मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस वर्ष मेरा शुल्क माफ कर दीजिए ताकि मैं आपके ही विद्यालय में शिक्षा जारी रख सकूँ।

मुझे आशा है कि आप मेरी प्रार्थना पर विचार करेंगे व मुझे इस रूप में आर्थिक सहायता देकर अनुग्रहीत करेंगे।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी छात्र,
किशन
दिनांक : 12 अक्टूबर, 2019

अथवा

अपने क्षेत्र के थानाध्यक्ष को अपने साथ हुए किसी अपराध की सूचना 80–100 शब्दों में एक पत्र लिखकर दीजिए।

उत्तर :

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
सेवा में,
थानाध्यक्ष महोदय,
तिलक नगर थाना
नई दिल्ली
दिनांक : 18 मई, 2019

विषय– संगीन अपराध की सूचना।

आदरणीय महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं तिलक नगर क्षेत्र का एक जिम्मेदार नागरिक हूँ व अपने क्षेत्र में गत सप्ताह हुए एक संगीन अपराध की सूचना आपको देना चाहता हूँ। दिनांक 10 मई को, सायं 7 बजे के आस–पास मैं बाजार से आ रहा था। अचानक देखा कि एक मोटरसाइकिल पर सवार दो युवकों ने मेरे कुछ आगे चल रही एक महिला से पहले तो छेड़छाड़ की, जब वह घबरा गई तो उसका पर्स व गहने लेकर फरार हो गये। वह महिला इतना घबरा गई और लज्जित महसूस करने लगी कि उसने शायद पुलिस को सूचना भी नहीं दी। किन्तु मुझे लगता है कि इस तरह तो अपराधियों की हिम्मत बढ़ती जायेगी।

आपको जल्दी ही इस तरह की घटनाओं पर रोक लगाने के लिए सख्त कदम उठाने चाहिए। यदि जनता सुरक्षित ही न हो तो नियम–कानूनों का क्या लाभ?

आशा है, आप जल्द ही उचित कदम उठायेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय,
हेमराज राजपूत

14. विद्यालय के बाहर खड़े खोमचे वालों से कोई छात्र कुछ न खरीदे। यह हिदायत देने के लिए प्रधानाचार्य की ओर से सूचना 40–50 शब्दों में जारी करें। **5**

उत्तर :

आदर्श विद्यालय

सूचना

छात्रों की सुरक्षा हेतु आवश्यक निर्देश

दिनांक : 20 अगस्त, 2019

विद्यालय के सभी छात्रों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सभी छात्रों को सख्त निर्देश दिए जाते हैं कि छुट्टी होने पर विद्यालय के बाहर खड़े खोमचे वालों से कुछ न खरीदें, बाहर बिना रूके सीधे घर जाएँ। यदि कोई छात्र विद्यालय के बाहर खड़ा हुआ या नियमों का उल्लंघन करता पाया गया तो उसके खिलाफ सख्त कदम उठाए जायेंगे।

धन्यवाद।

श्रीमान् अमित गोयल

प्रधानाचार्य

अथवा

गणेश चतुर्थी के अवसर पर आप अपनी सोसायटी में बच्चों की नृत्य प्रतियोगिता रखना चाहते हैं। सचिव होने के नाते 40-50 शब्दों में सूचना जारी करें।

उत्तर :

हर्ष सोसायटी

सूचना

गणेश चतुर्थी के अवसर पर नृत्य प्रतियोगिता

दिनांक : 15 अगस्त, 2019

सभी सदस्यों को जानकर खुशी होगी कि 02 सितंबर को सायं 4 बजे से 8 बजे तक गणेश चतुर्थी के अवसर पर एक रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है, जिसमें 5 से 15 साल तक के बच्चों की नृत्य प्रतियोगिता भी होगी। कृपया हस्ताक्षरकर्ता को 20 अगस्त तक नामांकन करायें।

धन्यवाद।

विवेक गुप्ता

सोसायटी सचिव

15. वेतन में पर्याप्त बढ़ोत्तरी न होने पर निराश दो कर्मचारियों की बातचीत को संवाद के रूप में लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

दो निराश कर्मचारी- रमेश और अशोक।

रमेश- कितने दिन से इन्तजार था कि इस बार तो वेतन में अच्छी बढ़ोत्तरी होगी, पर क्या हुआ। वही हर बार की तरह निराशा ही हाथ लगी।

अशोक- अरे भई, वेतन तो जितना हो, कम ही लगता है। सच बात तो यह है कि हमें खुशी से, अपनी सन्तुष्टि के लिए सच्चे मन से मेहनत करनी चाहिए।

रमेश- ऐसी बातें, केवल बातों तक ही ठीक हैं। जब परिवार के खर्चे ही पूरे नहीं होगे तो खुश कैसे रहा जा सकता है?

अशोक- मेरा मानना तो यह है कि खुश रहने का कोई कारण नहीं होता। खुश रहें और कोशिश करते रहें तो सब समस्याओं का हल निकल आता है।

रमेश- शायद तुम ठीक कहते हो। धन्यवाद, तुमसे बात करके मन हल्का हो गया। अब मैं भी सकारात्मक सोच के साथ काम करने की कोशिश करूँगा।

अथवा

वर्तमान सरकार के पक्ष व विपक्ष में अपनी राय देते हुए दो मित्रों के वार्तालाप को संवाद के रूप में लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

अमित- सभी सरकारी दल एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं।

मनोज- क्या हुआ, बड़े गुस्से में हो। किस बात से परेशान हो भाई?

अमित- परेशानी की तो बात ही है। इस बार बड़ी उम्मीद से वोट डाला था कि अच्छे दिन आयेंगे, लेकिन क्या हुआ! महँगाई बढ़ गयी, आए दिन देश में दंगे-फसाद होते रहते हैं, भ्रष्टाचार भी बढ़ा हुआ दिखाई दे रहा है।

मनोज- तुम अच्छे दिन किसे कहते हो? क्या सब कुछ मुफ्त में मिले और हम हाथ-पर-हाथ रखकर बैठ जायें। देश का विकास हो रहा है, पूरे विश्व में भारत की छवि निखर रही है।

अमित- इससे आम जनता को क्या फायदा?

मनोज- दूर की सोचो। कुछ बदलाव आने में समय लगता है। भ्रष्टाचार बढ़ नहीं रहा, बल्कि खुलकर सामने आ रहा है, दंगे-फसाद विरोधी दल सरकार को बदनाम करने के लिए करवा रहे हैं। हम सबको सरकार का समर्थन करना चाहिए, बड़ी सोच रखनी चाहिए।

अमित- शायद तुम ठीक कह रहे हो, मैं इस पर विचार करूँगा।

16. बच्चों के कपड़ों की नई दुकान के लिए आकर्षक विज्ञापन 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

मुस्कान गारमेंट्स

कपड़ों के पक्के रंग, सदा रहेंगे संग

₹5,000 की खरीद पर ₹1000 का विशेष उपहार

- हर उम्र के बच्चों के लिए,
- नये से नये डिजाइन व फैशन में।
- कपड़े ही कपड़े

आइए, आजमाइए, ले जाइए .....

जल्दी कीजिए, मौका हाथ से निकल न जाए .....

सम्पर्क

दुकान नं. 15

सदर बाजार, दिल्ली

मो. नं.- 9492808055

अथवा

आप विज्ञान विषय में स्नातक हैं। नौकरी पाने के लिए विज्ञापन 25–50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

नौकरी की तलाश
मैं राहुल शर्मा, उम्र 25 वर्ष, विज्ञान विषय में स्नातक हूँ। सम्पूर्ण शिक्षा जयपुर से प्राप्त की है। अंग्रेजी भाषा व कम्प्यूटर का अच्छा ज्ञान है। उचित पद होने पर कृपया सूचित करें। मो. नं.- 9852225255

WWW.CBSE.ONLINE

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and p aper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.